चाँद मुंगेरी

लगातार बढ़ता हुआ काफ़िला है
मिटा देगा हस्ती ये वो जलज़ला है

ज़माने से कोई शिकायत नहीं है
ज़माना सदा साथ मेरे चला है

घुटन है,तड़प है,अकड़ है यहाँ तो
सियासत से लबरेज़ यह मसअला है

भला उनकी जुम्बिश सहोगे कहाँ तक
मुसलसल अगन में जो तपकर पला हो

हवाओं में चिंगारी यूँ मत उछालो
इसी से गरीबों का घर ये जला है

सुनो चाँद रू की चुरा लेगा रौनक़
ये मौसम नहीं आज इतना भला है

मनोज अहसास

मन में संरक्षित इच्छाएँ और तन को संन्यास मिला
सब होकर भी दूर अकेले रहने का अभ्यास मिला

पीड़ा पथ का अनुगामी मन ढूंढ रहा था ठौर नया
सहसा अंतर के आँगन में फिर तेरा आभास मिला

प्राणों में भर गयी वेदना रिक्त हुए मन में संताप
सब कुछ सहन किया है हमने जब तुझको मधुमास मिला

आकुलता की गहन अवस्था तुझको खोने का परिताप
कोई नहीं जगत में अपना इससे ये विश्वास मिला

पर उपदेश कुशल बहुतेरे की जीवन शैली पायी
जिनका कोई छोर नहीं मन उन पापों का दास मिला

इसीलिए तू मेरे जीवन का पूरक है निर्मोही
मैनें जो कुछ भी खोया वो सब कुछ तेरे पास मिला

कातर स्वर में तुझे पुकारा करती हैं रोती ग़ज़लें
प्रतिउत्तर में सदा कर्णों को निरवता संत्रास मिला

ISSN:2583-8849